

## पंच गौरव-चित्तौड़गढ़

जिला प्रशासन चित्तौड़गढ़



मुख्यमंत्री  
राजस्थान

## संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच-गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

  
(भजन लाल शर्मा)

## प्रज्ञा केवलरमानी

आई.ए.एस.



संभागीय आयुक्त

उदयपुर 313001 (राज.)

## संदेश

पंच गौरव कार्यक्रम, जिलों की विशिष्ट पहचान को उभारने और स्थानीय संसाधनों को विकास से जोड़ने की शासन की एक अत्यंत प्रभावशाली पहल है। चित्तौड़गढ़ जिले द्वारा बेलपत्र, सीताफल, ग्रेनाइट व मार्बल, चित्तौड़गढ़ दुर्ग एवं कब्ज़ी के रूप में चयनित पंच गौरव जिले की बहुआयामी क्षमताओं को रेखांकित करते हैं।

उपरोक्त गौरवों पर आधारित 'पंच गौरव' जिला चित्तौड़गढ़ पुस्तिका, जिले के इतिहास, आर्थिक संभावनाओं एवं विकास योजनाओं की जानकारी को समाहित करते हुए, आमजन एवं पर्यटकों के लिए एक उपयोगी दस्तावेज सिद्ध होगी। यह उपक्रम जिले को नई पहचान दिलाने में सहायक होगी।

इस सार्थक प्रयास के लिए शुभकामनाएं एवं जिले के उत्तरोत्तर विकास की कामना करती हूँ।

(प्रज्ञा केवलरमानी)  
संभागीय आयुक्त,  
उदयपुर

**आलोक रंजन**  
जाई-ए-एस



**जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट**  
**चित्तौड़गढ़ – 312001(राज.)**

### सन्देश

‘पंच गौरव’ कार्यक्रम जिले के सर्वांगीण विकास के दृष्टिगत जिले के उत्पादों/स्थनों का चयन कर उसके संरक्षक, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दिये जाने हेतु महत्वपूर्ण कदम हैं। जिले में बेलपत्र, सीताफल, ग्रेनाइट व मार्बल, चित्तौड़गढ़ दुर्ग एवं कब्ज़ी ‘पंच गौरव’ हेतु चिन्हित किये गये हैं।

चित्तौड़गढ़ जिला ऐतिहासिक रूप से समृद्ध रहा है, इसकी विरासत एवं इतिहास विश्व विख्यात है। चित्तौड़गढ़ जिला औद्योगिक दृष्टि से विकसित रहा है। जिसका विकास एवं रोजगार में योगदान है। उत्तोगों में मार्बल, ग्रेनाइट एवं सीमेंट उत्तोग प्रसिद्ध है। जिले में सीताफल का प्रचुर मात्रा में उत्पादन होता है तथा जिले में ‘सीताफल उत्कृष्टता’ केन्द्र भी स्थापित है। इसी के साथ जिले में बेलपत्र हेतु भोगोलिक परिस्थियां अनुकूल होने से बेलपत्र भी बहुतायत मात्रा में होता है। कब्ज़ी खेल जिले में सभी जगह खेला जाता रहा है। जिले से प्रतिवर्ष कई खिलाड़ियों का राज्य स्तर पर चयन होता है।

जिला प्रशासन ‘पंच गौरव’ कार्यक्रम के तहत राज्य सरकार के सहयोग से सभी क्षेत्रों में नये आयाम स्थापित करने हेतु प्रतिबद्ध है। इस नवीन प्रयास के सफल होने एवं जिले की विकास एवं उन्नति की शुभकामनाएं करता हूँ।

(आलोक रंजन)  
जिला कलक्टर  
चित्तौड़गढ़

## "पंच गौरव" कार्यक्रम

### 1. प्रस्तावना :-

राज्य सरकार द्वारा राज्य के सर्वांगीण विकास के दृष्टिगत प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/स्थलों का चयन कर उसके संरक्षक, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दिये जाने हेतु प्रत्येक जिले में विरासत एवं संरक्षण के साथ इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी करने बाबत् "पंच गौरव" कार्यक्रम शुरू किया गया है।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत जिला स्तर पर चयनित एक जिला एक उपज, एक जिला एक वनस्पति, एक जिला एक उत्पाद, एक जिला एक पर्यटन स्थल, एवं एक जिला एक खेल के संवर्धन एवं विकास हेतु कार्य योजना तैयार कर आगामी वित्तीय वर्ष में कार्यक्रम के अन्तर्गत जिले के चिह्नित पंच गौरव से संबंधित 1-2 प्रमुख कार्यों के प्रस्ताव मय विवरण राज्य सरकार को प्रेषित किये जाने हैं साथ ही पंच गौरव से संबंधित एक लघु फिल्म भी तैयार की जानी है।

### 2. कार्यक्रम के उद्देश्य:-

- जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन।
- स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवत्ता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिलों से प्रवास को रोकना।
- प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।
- खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सृजित करना।
- सभी जिलों में समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/असंतुलन को कम करना।

### चित्तौड़गढ़ जिले के चिह्नित "पंच गौरव"

- एक जिला—एक उपज बेलपत्र (वन विभाग )
- एक जिला—एक वनस्पति सीताफल (उद्यान विभाग)
- एक जिला—एक उत्पाद ग्रेनाइट एवं मार्बल (उद्योग विभाग)
- एक जिला—एक पर्यटन स्थल चित्तौड़गढ़ दुर्ग (पर्यटन विभाग)
- एक जिला—एक खेल कबड्डी (खेल विभाग)

## एक जिला—एक उपज

### बेलपत्र

#### प्रस्तावना :-

प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर प्रदेश में सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में ‘पंच—गौरव’ कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है।

कार्यक्रम अन्तर्गत राज्य में प्रत्येक जिले उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए “पंच—गौरव” के रूप में एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति (One District & One Species) के संबंध में चित्तौड़गढ़ जिले में “बेलपत्र” (*Aegle marmelos*) के पौधे का चयन किया गया है।

बेलपत्र को संस्कृत में बिल्व पत्र कहा जाता है। बेलपत्र को काफी पवित्र माना जाता है, जिसे देवी देवताओं को चढ़ाया जाता है। अंग्रेजी में बुड़ एप्पल कहा जाता है। वानस्पतिक नाम ऐग्ल मार्मेलोस (*Aegle marmelos*) है। इस पौधे का धार्मिक महत्व है, साथ ही कई स्वास्थ्य लाभ भी है।



बेलपत्र वृक्ष

## **उद्देश्य :-**

पंच गौरव कार्यक्रम के अन्तर्गत बेलपत्र का चयन करने का उद्देश्य लोगों को इसके पौराणिक महत्व, औषधीय गुणों एवं इसके विभिन्न हिस्सों से मिलने वाले लाभ के बारे में अवगत कराना है। जिससे जनमानस में प्राकृतिक वनस्पति के प्रति जागरूकता बढ़े तथा स्वास्थ्य लाभ के घरेलू एवं नुकसान रहित पारम्परिक तरीके बताए जा सके।

## **भौगौलिक परिस्थितियाँ :-**

बेलपत्र के पौधे के लिए सामान्य जलवायु की जरूरत होती है। इसे रेतीली, चिकनी, दोमट, काली किसी भी प्रकार की मिट्टी में लगाया जा सकता है, जो अत्यधिक अम्लीय और क्षारीय नहीं हो, इस पौधे को सामान्य नमी की जरूरत होती है। जल भराव वाली जगह पर बेलपत्र का पौधा नहीं लगाना चाहिए।

इसके वृक्ष 14 फीट ऊँचे कँटीले एवं मौसम में फलों से लदे रहते हैं। इसके पत्ते गंध युक्त होते हैं तथा स्वाद में तीखे होते हैं। गर्मियों में पत्ते गिर जाते हैं तथा मई में नए पुष्प आ जाते हैं। फल मार्च से मई के बीच आ जाते हैं। बेल के फूल हरी आभा लिए सफेद रंग के होते हैं व इनकी सुगंध भी मन भावनी होती है।

## **उपयोगिता:-**

- **बेलपत्र का धार्मिक एवं पौराणिक महत्व :-** हिन्दु धर्म में बेलपत्र पौधे को दिव्य वृक्ष माना जाता है, जिसे भगवान शिव को छढ़ाया जाता है, शिव पुराण में बेलपत्र पेड़ या उसके पत्तों की पूजा का महत्व बताया गया है। बेलपत्र के पूजन से सत्त्व गुण बढ़ता है। जैन धर्म में भी बेलपत्र का विशेष महत्व है। माना जाता है कि 23वें तीर्थकर पाश्वर्वंत ने इसी वृक्ष के नीचे निर्वाण प्राप्त किया था। वास्तु शास्त्र में भी घर में बेलपत्र का पेड़ लगाने का विशेष महत्व माना जाता है।
- **बेलपत्र का औषधीय महत्व :-** बेलपत्र के फल में मौजूद विटामिन E, B6, B12 और B1 सी तथा कैल्शियम पोटेशियम फाइबर आदि पाये जाते हैं, जो शरीर के विकास के लिये आवश्यक है और कई प्रकार की बीमारियों से बचाव में सहायक है। बेलपत्र के रोजाना सेवन से उच्च रक्तचाप और कोलेस्ट्रॉल जैसी कई हृदय की समस्याओं को नियंत्रित करनें में मदद मिलती है। बेलपत्र के फल में कई एंटी फंगल एंड एंटीवायरस गुण होते हैं, जो शरीर के कई संक्रमणों के इलाज करने में मदद करते हैं। बेलपत्र के फल में एंटीऑक्सीडेंट गुण भी पाए जाते हैं। बेलपत्र का नियमित प्रयोग रक्त में शुगर लेवल नियंत्रित करता है साथ ही अपच, कब्ज, एसिडिटी आदि समस्याओं में भी काफी लाभप्रद है।

## सेहत के फायदे

- बेल फल में मौजूद टैनिन डायरिया और कालरा जैसे रोगों के उपचार में काम आता है।
- कच्चे फल का गूदा सफेद दाग बीमारी का प्रभावकारी इलाज कर सकता है।
- इससे एनीमिया, आंख और कान के रोग भी दूर होते हैं।
- बेल के पत्ते के चूर्ण के सेवन से कैंसर होने की संभावना कम रहती है।
- पुराने समय में कच्चे बेल के गूदे को हल्दी और धी में मिलाकर टूटी हुई हड्डी पर लगाया जाता था।
- इसमें मौजूद एंटी ऑक्सीडेंट्स के चलते पेट के छालों में आराम मिलता है।
- वायरस व फंगल रोधी गुणों के चलते यह शरीर के कई संक्रमणों को दूर कर सकता है।
- विटामिन सी का अच्छा स्रोत होने के चलते इसके सेवन से सर्वी नामक रक्तवाहिकाओं की बीमारी में आराम मिलता है।
- बेल की पत्तियों का सत्त्व रक्त में कोलेस्ट्रॉल का स्तर कम करने में लाभदायक है।
- पेड़ से मिलने वाला तेल अस्थमा और सर्दी— जुकाम जैसे श्वसन संबंधी रोगों से लड़ने में सहायक है।
- पके हुए फल के रस में धी मिलाकर पीने से दिल की बीमारियां दूर रहती हैं।
- कब्ज दूर करने के सबसे अच्छी प्राकृतिक दवा है। इसके गूदे में नमक और काली मिर्च मिलाकर खाने से आंतों से विषेले तत्व बाहर निकल जाते हैं।
- खून की कमी को दूर करे :— जिन लोगों में खून की कमी की समस्या होती है वे पके हुए सूखे बेल की गिरी का पाउडर बनाकर गर्म दूध में मिश्री के साथ एक चम्मच पावडर प्रतिदिन देने से शरीर में नए रक्त का निर्माण होकर स्वास्थ्य लाभ होता है।
- डायरिया :— गर्मियों में डायरिया की समस्या बहुत आम होती है। ऐसी स्थिति में होने वाले उल्टी, दस्त, वंजी मिचलाने में बेल के गूदे को पानी में मथकर चीनी मिलाकर पीने से लाभ होता है। इससे आपको अंदर से अच्छा महसूस होगा और पेट को शीतलताका आभास होता है।
- लू लगने पर :— गर्मियों में लू लगने पर बेल के ताजे पत्तों को पीसकर मेहंदी की तरह पैर के तलुओं में भली प्रकार मलें। इसके अलावा सिर, हाथ व छाती पर भी इसकी मालिश करें। मिश्री डालकर बेल का शर्बत भी पिलाएं, तुरंत राहत मिलती है।
- मुँह के छाले :— मुँह में छाले और मसूड़ों के रोग से काफी लोग परेशान होते हैं। ऐसी स्थिति में बेल का गूदा पानी में उबालकर कुल्ला करने से छाले और मसूड़ों की समस्या दूर होती है। अगर आप इसका परिणाम चाहते हैं तो नियमित रूप से इस प्रक्रिया को

अपनाएं।

- भूख बढ़ाएं :— भूख कम हो कर्ज हो जी मिचलाता हो तो इसका गूदा पानी में मथकर रख लें और उसमें चुटकी भर लौंग कालीमिर्च का चूर्ण ,वं मिश्री मिलाकर कुछ दिन लेने से भूख बढ़ेगी इन आदि कार्यों में बेलपत्र का प्रयोग किया जा सकता है।

#### ● बेलपत्र का व्यापारिक महत्व

—धार्मिक महत्व और स्वास्थ्य लाभ वाले इस पौधे का व्यापारिक महत्व भी है। वर्तमान में कई कंपनियां जो आयुर्वेद दवाओं की निर्माता हैं। इसके फल और छाल को खरीदते हैं, साथ ही ऑनलाइन मार्केटिंग प्लेटफार्म पर भी बेचा जा सकता है। प्लेटफार्म पर इसके फल को कृषि उपज मंडियों में भी बेचा जा सकता है।

- बेलपत्र को कैसे खाए :—बेलपत्र के अधपके फल की चटनी बनाकर खाया जाता है। अधपके या पके फलों का अचार और मुरब्बा भी तैयार किया जाता है। जो अत्यधिक पौष्टिक और स्वादिष्ट होता है। पके हुए बेलपत्र का ज्यूस बनाकर पिया जाता है। बेलपत्र का चूर्ण बनाकर भी खाया जाता है।

#### रोजगार के अवसर :—

बेलपत्र का धार्मिक, औषधीय और व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण है। इससे जुड़े विभिन्न रोजगार और व्यवसायिक अवसर निम्नलिखित हैं:

##### i) कृषि एवं खेती से जुड़े अवसर

बेलपत्र की व्यावसायिक खेती— बेलपत्र की संगठित खेती कर इसे मंदिरों, औषधीय कंपनियों और बाजार में बेचा जा सकता है।

नर्सरी व्यवसाय— बेलपत्र के पौधों की नर्सरी तैयार कर किसान और उद्यमियों को बेचा जा सकता है।

##### ii) धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में अवसर

मंदिरों में आपूर्ति — बेलपत्र शिव मंदिरों में प्रमुख रूप से चढ़ाया जाता है, जिससे इसकी सप्लाई का एक स्थायी बाजार उपलब्ध होता है।

### HEALTH BENEFITS OF BAEL POWDER

 High on Carbs	 Rich in Potassium	 Loaded with Calcium
 Rich in Iron	 Abundance of Vitamins	 Powerhouse of Antioxidants
 Treats Constipation	 Increases Metabolism	 Helps in Weight loss



पैक किए गए बेलपत्र की बिक्री कई बड़े शहरों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर पूजा सामग्री के रूप में पैकिंग करके बेचा जा सकता है।

### iii) औषधीय एवं आयुर्वेदिक उत्पाद

हर्बल प्रोडक्ट्स निर्माण – बेलपत्र से कई प्रकार की आयुर्वेदिक दवाएं, पाउडर, जूस और अर्क बनाए जाते हैं। इन उत्पादों को ऑनलाइन और ऑफलाइन बेचा जा सकता है।

बेलपत्र चूर्ण एवं अर्क उत्पादन – डायबिटीज, अपच और अन्य रोगों के लिए उपयोगी बेलपत्र के अर्क को तैयार कर औषधीय कंपनियों या सीधे उपभोक्ताओं को बेचा जा सकता है।

### vi) खाद्य एवं पेय उत्पाद

बेलपत्र का जूस और शरबत – स्वास्थ्य लाभ को देखते हुए बेलपत्र का जूस और शरबत एक अच्छा बिजनेस विकल्प हो सकता है।

हर्बल चाय निर्माण – बेलपत्र को सुखाकर इससे हर्बल चाय तैयार की जा सकती है, जो स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होती है।

### v) निर्यात एवं ऑनलाइन व्यापार

ई-कॉमर्स बिजनेस – बेलपत्र से बने उत्पादों को अमेज़न, पिलपकार्ट, और आयुर्वेदिक ऑनलाइन स्टोर्स पर बेचा जा सकता है। निर्यात व्यापार – बेलपत्र और इसके उत्पादों की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी मांग है, खासकर आयुर्वेदिक उत्पादों के लिए।

**वर्तमान स्थिति :-** चित्तौड़गढ़ में बेलपत्र सर्वाधिक बड़ीसादडी, भैसरोड़गढ़ एंव बोराव में पाया जाता है तथा बेलपत्र आमतौर पर पूरे जिल में पाया जाता है। वर्तमान में वन विभाग की सभी नर्सरी में बेलपत्र के पौधे तैयार किये जा रहे हैं। जो जुलाई के माह से उपलब्ध हो जाएगे।

**भविष्य की कार्ययोजना :-** योजना के आमजन में प्रचार-प्रसार के लिए बेलपत्र की और अधिक जानकारी एंव लाभ के बारे में आमजन को अवगत कराया जावेगा।

वन विभाग द्वारा आयोजित पर्यावरण दिवस, वन महोत्सव एंव हरियाली तीज जैसे कार्यक्रमों में स्वयं सहायता समूहों द्वारा स्टॉल लगाय जायेगे। जिससे महिला सशक्तीकरण होगा एंव रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी। जनमानस में जागरूकता बढ़ने के साथ चित्तौड़गढ़ में बेलपत्र वृक्षों की संख्या में वृद्धि होगी, स्थानीय अर्थव्यवस्था को बल मिलेगा तथा पर्यावरणीय स्वास्थ्य में सुधार होगा।

- अनुमानित बजट :-

क्र.सं.	गतिविधियां	राशि (लाखों में)	अवधि
1	पौध तैयारी ( $9.02 \times 100000$ )	9.02	5 माह (फरवरी-जून)
2	आमजन की सहभागिता	0.50	12 माह
3	आर्थिक उपयोगिता	0.30	12 माह
4	JFMc/SHG/VFPMC Training	0.50	3 माह
5	वृक्षारोपण कर मदर ट्री विकसित करना	25.00	5 माह ( जून-अक्टूबर)
6	Research and development	50.00	
7	Coffee Table book	10.00	
8	Social media	5.00	
9	Collection centre	100.00	
	Total	200.32	

योजना की अनुमानित लागत लगभग 200.32 (लाखों में) है।

## एक जिला—एक वनस्पति

### सीताफल

1. परिचय – सीताफल का वानस्पतिक नाम एनोना स्क्वेमोसा (*Annona-Squamosa*) तथा एनोनेसी (*Annonacy*) कुल का पौधा है। सीताफल एक अत्यन्त पौष्टिक तथा स्वादिष्ट फल है। सीताफल के पौधों में सूखा सहन करने की अधिक क्षमता होती है। सीताफल का उत्पत्ति स्थान दक्षिण अमेरिका तथा वेस्टइंडीज हैं। भारत में सीताफल की खेती मुख्य रूप से आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र व राजस्थान में की जाती है राजस्थान में मुख्य रूप से चित्तौड़गढ़, उदयपुर, राजसमन्द, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ आदि जिलों में काफी मात्रा में यह फल पाया जाता है। सीताफल को जानकीफल, शरीफा, कृष्णबीज आदि नामों से भी जाना जाता है।

सीताफल में निम्नानुसार पौष्कर तत्व पाये जाते हैं।

क्र.स.	पोषक तत्व	विद्यमान मात्रा (प्रति 100 ग्राम)
1	ऊर्जा (कैलोरी)	80–101
2	प्रोटीन	1.17 – 2.47 ग्राम
3	वसा	0.2–0.6 ग्राम
4	कार्बोहाईड्रेड	20 – 25.2 ग्राम
5	फाईबर	0.9 – 6.6 ग्राम
6	कैल्सियम	17.6–27 मि.ली ग्राम
7	फॉस्फोरस	14.7–32.1 मि.ली ग्राम
8	लोहा	0.06 – 1.14 मि.ली ग्राम
9	कैरोटिन	0.007 मिली ग्राम
10	थाइमीन	0.075 मिली ग्राम
11	राइबोफ्लेमिन	0.086 मिली ग्राम
12	नाइसिन	0.528 मिली ग्राम
13	एस्कोर्बिक एसिड	15.00 मिली ग्राम



- 2. सीताफल के औषधीय गुणः—** आयुर्वेदिक एवं कई बुजुर्गों के अनुसार सीताफल इतना गुणकारी है कि शायद ही शरीर का कोई हिस्सा ऐसा हो जिसे यह फायदा न पहुँचाता हो। सीताफल में निम्नानुसार अनगिनत औषधीय गुणों के समाहित होने से यह शरीर को स्वस्थ और निरोगी रखता है।
- 2.1 रोग प्रतिरोधकता:—** सीताफल में प्राकृतिक एन्टी ऑक्सीडेन्ट, विटामीन-सी की प्रचुर मात्रा पाये जाने से हमारे इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने में सहायक है। यह एक अच्छा एनर्जी स्ट्रोत है इससे थकावट और मांसपेशियों की कमजोरी महसूस नहीं होती। सीताफल के सेवन से खून की अल्पता दूर होती है। इसमें कैल्सियम, आयरन और फास्फोरस भी प्रचुर मात्रा में पाये जाने से यह ऊर्जा का भरपूर स्ट्रोत है।
- 2.2 दमकती त्वचा:—** विटामीन 'ए' और एन्टी ऑक्सीडेन्ट्स से भरपूर सीताफल ऊतकों के पुनर्निर्माण में सहायक होकर कोशिकाओं को क्षति पहुँचने से बचाव करता है। यह फ्री – रेडिकल्स से त्वचा की सुरक्षा करता है एवं त्वचा को नरम और चमकदार बनाता है। चेहरे पर झुर्रिया कम आती है तथा एजिंग के लक्षण भी कम दिखायी देते हैं, त्वचा जंवा एवं चमकदार रहती है। इसके सेवन से बालों में भी मजबूती आती है।
- 2.3 बी.पी. एवं मधुमेह नियंत्रण:—** आजकल के तनाव भरे वातावरण में ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करता है। इसमें पाये जाने वाले सोडियम एवं पोटेशियम से दिमाग शान्त रहता है एवं तनाव कम रहता है। स्वाद में मीठा सीताफल डायबिटीक की पेचीदगी को कम करता है शरीर में मौजूदा ब्लड शुगर बढ़ने से रोकता है।
- 2.4 पाचन को बेहतर बनाये:—** पाचन तंत्र की मजबूती के लिए आहार में रेशा प्रचुर मात्रा में होना जरूरी है सीताफल में रेशा प्रचुर मात्रा में होता है जिससे कब्ज व पाचन से जुड़ी समस्याएँ दूर होने लगती है यह आसानी से पचने वाला एसिडिटी और अल्सर में बहुत लाभकारी होता है।
- 2.5 दिल को स्वस्थ रखे:—** सीताफल में मैग्निशियम पाये जाने से दिल के अच्छे स्वास्थ्य हेतु, दिल की मांसपेशियों को आराम पहुँचाने के लिए सहायक है। इसमें स्थित पोटेशियम हृदयधात रोकने में सहायक होता है तथा तनाव को कम करते हुए खराब कोलेस्ट्रॉल को भी कम करता है।

- 2.6 रक्त अल्पता (एनीमिया):—** आयरन की कमी से होने वाले एनीमिया को दूर करने में सीताफल बहुत मददगार साबित है क्यों कि इसमें आयरन प्रचुर मात्रा में मौजूद रहता है यह रक्त अल्पता से बचाव कर, रक्त संचार भी दुरुस्त करता है।
- 2.7 आँखों की कमजोरी एवं गठिया रोग से सुरक्षा—** आँखों की रोशनी के लिए भी सीताफल कारगर है, क्योंकि इसमें विटामन “ए” एवं राइबोफ्लेविन काफी ज्यादा होता है। सीताफल में मौजूद मैग्निशियम शरीर में पानी को संतुलित करता है तथा जोड़ो में होने वाले अम्ल को हटा देता है, यह अम्ल गठिया रोग का मुख्य कारण होता है। इस प्रकार सीताफल गठिया रोग से सुरक्षा करता है। एक अनुसंधान के अनुसार सीताफल की पत्तियों का काढ़ा रूमेटिक गठिया में राहत दिलाता है। गठिया का दर्द कम करने, सूजन को भी कम करता है।
- 2.8 कैन्सर से बचाव:—** अध्ययन बताते हैं कि सीताफल में मौजूद एसिटोजिनिन एवं एल्कोनाईड्स कैन्सर के ट्यूमर सेल्स के विकास को राकते हैं। यह शरीर के पी.एच.स्तर को भी संतुलित करता है। इसे टॉनिक के रूप में क्षय रोग में भी प्रयोग किया जाता है।
- 2.9 बलवर्धक के रूप में:—** मनचाहा वजन बढ़ाने, विभिन्न प्रतियोगिता में भाग लेने वाले खिलाड़ियों के तंत्रिका तंत्र एवं माँसपेशियों, जोड़ो की मजबूती के लिए पोटेशियम की पूर्ति करता है। इसमें पाया जाने वाला कॉपर व कैल्सियम बलवर्धक, शुक्रवर्धक, दाँतों, हड्डियों एवं मसूड़ों की सुरक्षा एवं मुँह की बदबू हटाने में सहायक है। इसके सेवन से थकावट दूर होकर उत्साह और जोश आता है। इसलिए इसे बेबी फूड्स और टॉनिक के रूप में प्रयोग किया जाता है।
- 2.10 प्रेग्नेंसी में सहायक—** सीताफल में फोलेट की प्रचुर मात्रा होने से सुरक्षित प्रेग्नेंसी में मदद करता है व इस दौरान गर्भपात की संभावना को भी कम करता है। गर्भावस्था में जी मचलाना, उल्टी होने से रोकता है तथा बच्चों को पिलाये जाने वाले दूध में बढ़ोतरी करता है।

**2.11 बीज के तेल का प्रयोग:-** सीताफल के बीजों से 30: तेल मिलता है जो साबुन के निर्माण में काम आता है। इसका तेल विषाक्त होने से जू नियंत्रण में भी काम आता है। इसकी खली खाद के रूम में भी उपयोगी है।

**2.12 कीटनाशी व खाद के रूप में उपयोग—** सीताफल के पत्त्य के अतिरिक्त छिलकों, पत्तियों एवं खली आदि से कम्पोस्ट का निर्माण किया जाता है। सीताफल के पेड़ में और पत्तों में हाईड्रोसायनिक अम्ल होता है। उसी के कारण सीताफल के पत्ते व बीज वीषेले होते हैं। सीताफल के पत्तों व बीजों का अर्क स्पर्शजन्य और अंतर प्रवाही या तरल विषजन्य के तौर पर काम करता है। यह अर्क कीटनाशी, कृमीनाशी और कीट का अप्रिय भोजन ऐसे तीनों प्रकार से काम करता है। जैविक खेती में इसका अर्क जैव कीटनाशी के तौर पर भी काम में लिया जाता है।



### 3. सीताफल की उन्नत किस्में –

**3.1 बाला नगर –** सीताफल की यह किस्म तैलंगाना राज्य के मेडचल—मलकाजगिरि जिले के बालानगर तहसील के बालानगर गांव की स्थानीय किस्म से चयन पद्धति द्वारा विकसित की गई है। इसके फलों का आकार कोनाकार होता है। फल मध्यम आकार के होते हैं। फल 6 से.मी. लम्बे एवं 5 से.मी. गोलाई लिये होती हैं। फलों का रंग

हल्का हरा होता है। फल का वजन 250–500 ग्राम तक होता है। इसमें शक्कर की मात्रा 20–22% तक होती हैं। गुदे की मात्रा 25–35% होती है। इसके प्रत्येक फल में बीजों की संख्या 25–80 तक होती हैं। पेड़ पर फल तैयार होने में 3.5 से 4.5 महीने लगते हैं। प्रति पौधा 08–10 कि.ग्रा. फल प्राप्त होते हैं।

- 3.2 **अर्कासहन—** सीताफल की यह किस्म भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलूरू-कर्नाटक से विकसित की गई है। इसके फल का वजन 250–700 ग्राम तक होता है। प्रत्येक फल में बीजों की संख्या 40–50 तक होती हैं। शक्कर की मात्रा 25% तथा गुदे की मात्रा 35–45% होती है। पेड़ पर फल परिपक्व होने में 5 से 6 महीने लगते हैं। फल का रंग पीला होता है। आँखे बड़ी व रसीली होती हैं। प्रति पौधा 12–15 कि.ग्रा. फल प्राप्त होते हैं। इस किस्म में फल कम लगते हैं लेकिन हस्तपरागण द्वारा उपज व फल की गुणवत्ता बढ़ाई जा सकती हैं।
- 3.3 **मेमॉथ—** सीताफल की यह किस्म वेस्टइंडीज से आई हुई है। इसके फल बड़े 9.6x7.0 से.मी आकार के होते हैं। यह फल फीके हरे रंग के दिल के आकार के होते हैं। फलों की सतह चिकनी व चमकीली होती हैं। फल का वजन 180–200 ग्राम तक होता है। फल में शक्कर की मात्रा 25 से 27% एवं गुदे की मात्रा 44% तक होती है। गुदा सफेद व दानेदार होता है। एक फल में लगभग 40 से 42 बीज होते हैं।
- 3.4 **लाल सीताफल-1 :-** इस किस्म के फलों का रंग बाहर से लाल होता है। इसके फल का वजन 250–700 ग्राम तक होता है। इसके फल में शक्कर की मात्रा 23–25% तक तथा गुदे की मात्रा 35–40 % होती है। फल का आकार 7X7-5 से.मी. होता है। प्रत्येक फल में 25–40 बीज होते हैं। फल गोलाकार दिखता है तथा तल समतल होता है।
- 3.5 **चाँदसिली:-** इस किस्म के पौधों का आकार बड़ा होता है। फल का वजन 300–1100 ग्राम तक होता है। यह मौसम के बाद देर से आने वाली किस्म है। फल में शक्कर की मात्रा 22–24% तक तथा गुदे की मात्रा 40–45% तक होती है। फल का आकार एक जैसा नहीं होता है। इसकी आँखे नुकीली होती हैं।
- 3.6 **अनोना-2 (हनुमान फल):-** यह किस्म गणेशखण्ड जिला-पुणे महाराष्ट्र से विकसित की गई है। इसके फल का वनज 0.5 से 2.5 कि.ग्रा तक होता है। फल का आकार असमान होता है। फल में बीज बहुत कम होते हैं। फल में शक्कर की मात्रा 28–30% तथा गुदे की मात्रा 70–75% होती है। इसकी विशेषता यह है कि इसका गुदा मक्खन जैसा मुलायम, स्वादिष्ट होता है। आइसक्रीम जैसा यह गुदा चम्च से भी खाया जा सकता है। फल पकने के बाद जिस प्रकार नारीयल में पानी की आवाज आती है उसी प्रकार इसमें बीजों की आवाज आती है। यह मौसम के बाद देर से तैयार होने वाली किस्म है जिससे बाजार में अच्छा भाव मिलता है।

- 3.7 **अनोना-7:-** यह देर से आने वाली किस्म है। फल का वजन 1–1.5 कि.ग्रा. होता है। बीजों की संख्या कम होती है। इस किस्म के फलों का रंग बैंगनी होता है तथा फलों का आकार अनियमित होता है।
- 3.8 **NMK-2:-** यह किस्म मधुवन फार्म, गोरमाले, शोलापुर महाराष्ट्र पर विकसित की गई है। इसका रंग काला—सा लाल है। इसका गुदा गुलाबी रंग का होता है। फल का वजन 50–150 ग्राम होता है। बीजों की संख्या अधिक होती है। शक्कर की मात्रा 20–22% होती है। घर के बाहर लगाने के लिये यह बेमिसाल किस्म है।
- 3.9 **NMK-3:-** यह किस्म मधुवन फार्म, पर विकसित की गई है। फल का वजन 400–1200 ग्राम होता है। फल का आकार गोल होता है। बीज बहुत कम होते हैं। फल में शक्कर की मात्रा 22–24% तथा गुदे की मात्रा 45–50% होती है। मौसम के बाद देर से आने वाली यह किस्म है।
- 3.10 **NMK-1 (गोल्डन):-** यह किस्म मधुवन फार्म, पर विकसित की गई है। इस किस्म के फल पकने के 15–20 दिन तक पेड़ पर वैसे ही रख सकते हैं जिससे ज्यादा दूर के बाजारों में भेजने के लिए उपयुक्त है। बीज की संख्या 15–20 होती है। शक्कर की मात्रा 22–24% तथा गुदे की मात्रा 45–50% होती है। फल का वजन 300–900 ग्राम तक होता है। फल का रंग सुनहरा पीला होता है। इसकी आँखें बड़ी—बड़ी होती हैं। यह किस्म निर्यात के लिये उपयुक्त है।
- 3.11 **APK-1 (अरूप्पाकोटाई-1):-** यह किस्म अरूप्पाकोटाई—तमिलनाडु से विकसित की गई है। फल का वजन 200–210 ग्राम होता है। प्रति पौधा 70–72 फल लगते हैं। फल दिल के आकार के होते हैं। इस फल में शक्कर की मात्रा 22–25% तक है। प्रति पौधा 13–15 कि.ग्रा. फल प्राप्त होते हैं।
- 3.12 **सरस्वती-7:-** यह किस्म नागपुर महाराष्ट्र से विकसित की गई है। इसके फल का वजन 500 ग्राम से 1 किलोग्राम तक होता है। फल में गुदे की मात्रा 70 से 75 प्रतिशत होती है। फल में बीजों की संख्या 10 से 15 होती है। इसका फल गोलाकार एवं हल्का पीला रंग का होता है।
- 3.13 **अनोना म्यूरिकाटा (लक्ष्मण फल):-** सीताफल की इस किस्म में फल का वजन 500 से 800 ग्राम तक होता है तथा फल में गुदे की मात्रा 30 से 40 प्रतिशत तक होती है। फल में बीजों की संख्या 40 से 45 होती है। फल हृदय के आकार का एवं कांटेदार होता है। इस फल का उपयोग कैंसर रोग में अत्यंत लाभकारी है।
- 3.14 **पिंक मेमॉथ:-** सीताफल की इस किस्म में फल का वजन 1 से 2 किलोग्राम तक होता है तथा फल में गुदे की मात्रा 70 से 75 प्रतिशत होती है। फल से बीजों की संख्या 10 से 15 होती है। फलों का रंग पीला—गुलाबी होता है।

- 3.15 **GJCA -1 (ગુજરાત જુનાગઢ સીતાફલ-1):-** સીતાફલ કી યહ કિસ્મ જુનાગઢ કૃષિ વિશ્વ વિદ્યાલય દ્વારા વર્ષ 2011 મેં વિકસિત કી ગઈ હૈ। ફલ કા વજન 150 સે 200 ગ્રામ તક હોતા હૈ। ફલ મેં બીજોં કી સંખ્યા 20–25 હોતી હૈ। પ્રતિ પૌધા 35 સે 40 કિ.ગ્રા. ફલ પ્રાપ્ત હોતે હૈ। ફલ મેં શક્કર કી માત્રા 12–16 પ્રતિશત હોતી હૈ। એક પૌધે પર લગભગ 200 સે 220 ફલ લગતે હૈ। ફલ મધ્યમ આકાર કે હોતે હૈ। યહ કિસ્મ ગુજરાત કે સૌરાષ્ટ્ર ક્ષેત્ર કી સ્થાનીય કિસ્મ સીધન સે ક્લોનલ સલેક્શન કરકે વિકસિત કી ગઈ હૈ।
- 3.16 **સિંધન:-** સીતાફલ કી યહ કિસ્મ ગુજરાત કે સૌરાષ્ટ્ર ક્ષેત્ર કી સ્થાનીય કિસ્મ હૈ। ઇસકે ફલ કા વનજ લગભગ 150 ગ્રામ હોતા હૈ। ફલ મેં બીજોં કી સંખ્યા 30–40 હોતી હૈ। પ્રતિ પૌધા 25–30 કિલોગ્રામ ફલ પ્રાપ્ત હોતે હૈ। એક પૌધે પર લગભગ 150 સે 170 ફલ લગતે હૈ।
- 3-17 **અન્ય કિસ્મોને:-** સીતાફલ કી અન્ય કિસ્મોને મેં રાયડુર્ગ, ચાંદસિડલિંગ, લાલ સીતાફલ-2, રામફલ, ચેરીમોયા, અનોના ગલબા, આયસિકલ, વાશિંગટન જૈમ, અનોના મૉન્ટેના, હૈદરાબાદ સલેક્શન, વાશિંગટન 5703, ફોંગરપ્રિન્ટ્સ, ઓટોમોયા, ફુલે પુરંદર, આનન્દ સલેક્શન, બાર્બાડોસ સિડલિંગ, મહબૂબનગર, વિદ્યાનગર લોકલ, સહારનપૂર લોકલ, બ્રિટિશ જિનિયા, બુલક હાર્ટ, આઇસલૈણ્ડ જૈમ, અનોના રેટીકુલાટા, મદનપલ્લી, યેલો સીતાફલ, વી એન આર-મધુ, ટી.પી-7, અર્કા નીલાંચલ વિક્રમ, એનએમકે-4, બૈલ્લારી, વિરધુનગર, સેલમ સલેક્શન આદિ કિસ્મોને હૈ।

**વર્તમાન સ્થિતિ –** જિલે મેં કરીબન 120 હૈક્ટર ક્ષેત્ર મેં સીતાફલ કી ખેતી કા જા રહી હૈ। ચિતૌડુંગઢ જિલે મેં દુર્ગ ચિતૌડુંગઢ કે અતિરિક્ત કનેરા ઘાટા, નિમ્બાહેડા, બડીસાદડી, બેંગૂ રાશમી એવં ભૂપાલસાગર આદિ ક્ષેત્રોને કે પર્વતીય એવં પથરીલી ભૂમિ મેં સીતાફલ કી ખેતી કી જા રહી હૈને। સીતાફલ કી ખેતી કમ લાગત એવં કમ પાની તથા પડત, બેકાર પડી ભૂમિ પર ભી આસાની સે કી જા સકતી હૈ। જિલે કે કુલ ભૌગોળિક ક્ષેત્ર મેં સે 34110 હૈક્ટર અકૃષિ ઉપયોગ ક્ષેત્ર (પહાડી એવં બેકાર પડત) હૈ। જિસમેં સીતાફલ કી ખેતી આસાની સે કી જાકર કૃષકોને કી આમદની બઢાઈ જા સકતી હૈ। વર્તમાન મેં સીતાફલ ઉત્પાદન મેં મુખ્ય રૂપ સે વિપણન કી સમસ્યા કા સામના કરના પડે રહા હૈ। ક્ષેત્રફલ કમ હોને સે ફલો સે અચ્છી આમદની પ્રાપ્ત કરને હેતુ બાહર વિક્રય હેતુ ભેજા જા રહા હૈ। જિસસે ઉત્પાદન લાગત બઢે રહી હૈ।

**જિલે મેં ઉપલબ્ધી-** જિલે કી જલવાયુ સીતાફલ કે લિએ ઉપયુક્ત હોને સે સીતાફલ ઉત્કૃષ્ટતા કેન્દ્ર સ્થાપના કી ગઈ હૈ। વર્તમાન મેં રાજ્ય કા એકમાત્ર



सीताफल उत्कृष्टता केन्द्र चित्तौड़गढ़ मे संचालित है। केन्द्र पर 2.5 हैक्टर क्षेत्र मे सीताफल की 31 किस्मों पर अनुसंधान एवं प्रदर्शनों का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें 28 किस्में सफलता पूर्वक फलन मे है। केन्द्र पर विभिन्न किस्मों की पौध तैयार की जाकर कृषकों को वितरण किये जा रहे हैं, जो वर्तमान मे फलन की अवस्था मे है। केन्द्र पर सीताफल की खेती हेतु नवीन तकनिकी जानकारी कृषकों को प्रशिक्षणों के माध्यम से प्रदान की जाती है। जिसमें मुख्य रूप से सीताफल तुड़ाई उपरान्त प्रबन्धन एवं मूल्य संवर्द्धन हेतु यहां स्थापित फल परिक्षण प्रयोगशाला द्वारा प्रायोगिक रूप से प्रशिक्षण दिया जा रहा है। सीताफल के औषधीय गुणों के कारण इस फल के निर्यात की प्रचुर संभावनाए है।

### अभिवृद्धि एवं सशवित्करण करने के लिए प्रस्ताव—

क्र. स.	प्रस्ताव	विवरण				राशि (लाख रु. मे)
		क्र.स.	कार्य का नाम	भौतिक लक्ष्य	वित्तीय लक्ष्य(लाख मे)	
1	यदि कोई नवाचार प्रस्तावित हो तो, उसका विवरण एवं उसकी लागत।	1	प्रशिक्षण	5	5.00	
		2	कृषक ब्रमण	2	1.00	
		3	मूवेबल थ्रेसिंग	100	5.00	
		4	जैव उर्वरक एवं रसायन	100	1.00	
		5	प्लास्टिक केर्टेस	3000	18.00	
		6	फसल क्षेत्र विस्तार(0.5 है० प्रति प्रदर्शन)	100	30.00	
			योग		60.00	
			<ul style="list-style-type: none"> <li>• कृषकों को फसल की गुणवत्ता एवं तकनिकी क्षमता वृद्धि के लिये कैरीके/सीताफल उत्कृष्टता केन्द्र (चित्तौड़गढ़) मे प्रशिक्षणों का आयोजन कृषक वैज्ञानिक संवाद (50 कृषकों का समूह) प्रति प्रशिक्षण 100000 रुपये कुल 05(<math>5 \times 100000 = 500000</math>)</li> <li>• एक्सपोजर विजिट (50000 रुपये प्रति एक्सपोजर विजिट) कुल 2 (<math>2 \times 50000 = 100000</math>)</li> <li>• मूवेबल थ्रेसिंग फलोर (साईज 6X8 मीटर) –सीताफल के फलों की ग्रेडिंग एवं पैकेजिंग करने हेतु प्रस्तावित संख्या – 50 कृषकों के लिये (प्रत्येक कृषकों को 2 नग) लागत मूल्य का 75 प्रतिशत या अधिकतम 5000 रुपये जो भी कम हो।</li> <li>• फसल वृद्धि एवं पौध संरक्षण के लिये जैविक कीटनाशक–100 कृषक को 1000/- रुपये की या 75 प्रतिशत जो भी कम हो। मृदा मे पोषक तत्वो मे वृद्धि एवं सीताफल मे कीट नियंत्रण हेतु। कुल लागत का 75 प्रतिशत 0.75 लाख रुपये।</li> <li>• प्लास्टिक केरेट्स फलों के परिवहन हेतु 60 कृषकों के लिये (प्रत्येक कृषकों को 50 नग) लागत मूल्य का 75 प्रतिशत या अधिकतम 450 रुपये जो भी कम हो।</li> <li>• नये कृषकों एवं पूर्व मे सीताफल की खेती कर रहे कृषकों के क्षेत्र के विस्तार हेतु आदान अनुदान(0.50हैक्टर के लिये) 0.50 है बगीचा र 100 कृषक त्र 22500/- प्रति बगीचा रु.अनुदान राशि – 22.50 लाख रुपये</li> </ul>	60.00		

2	गैर सरकारी एवं स्वयं सेवी संस्थानों से मिले सहयोग का विवरण।	नाबार्ड के सहयोग से अनुसूचित जनजाति क्षेत्र के 50 कृषक को लाभान्वित किया जायेगा।	
3	कुल व्यय मय विवरण	सीताफल उत्पादक कृषकों के प्रशिक्षण, खेत संग्रहण इकाई कटाई मशीन मूवेबल थ्रेसिंग फ्लोर, मृदा में पोषक तत्वों में वृद्धि एवं सीताफल में कीट नियंत्रण के जौवाक रसायन एवं फल बगीचा स्थापना हेतु हेतु कुल 60.00 लाख रुपये की आवश्यकता होगी।	60.00
4	उपसहार (प्रस्तावों उपलब्धि के लक्ष्य सहित)	अ— कृषकों के यहां सीताफल उत्पादन एवं गुणवता में वृद्धि। ब— सीताफल बगीचे का नये क्षेत्र में विस्तार होगा। स—आय में वृद्धि होगी। द— सीताफल उत्पादक क्षेत्र के कृषकों को ग्रेडिंग, पैकेजिंग एवं परिवहन समस्या का समाधान होगा। जिससे अच्छी आमदनी प्राप्त होगी।	

## एक जिला—एक उत्पाद

### ग्रेनाइट एवं मार्बल

राज्य के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों / स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा सकती है।



प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर प्रदेश के सभी जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु राजस्थान सरकार ने दिसम्बर, 2024 में पंचगौरव कार्यक्रम की शुरुआत की गई। जिसके तहत चितौड़गढ़ जिले के एक जिला एक उत्पाद चितौड़गढ़ ग्रेनाइट व मार्बल को चुना गया। ग्रेनाइट एक आग्नेय चट्टान है जो पृथ्वी की सतह के नीचे पिघली हुई चट्टान (मैग्मा) के धीरे-धीरे ठंडा होने और जमने से बनती है। इस प्रक्रिया में लाखों वर्ष लग सकते हैं, जिससे मैग्मा के अंदर के खनिज क्रिस्टलीकृत हो जाते हैं और ग्रेनाइट की विशेषता वाले विशिष्ट दाने बन जाते हैं। एक बार जब मैग्मा ठंडा हो जाता है और जम जाता है, तो यह अंततः कटाव या उत्थान के माध्यम से पृथ्वी की सतह पर उजागर हो जाता है।

ग्रेनाइट की संरचना इसके निर्माण के स्थान के आधार पर भिन्न होती है। हालाँकि, इसमें आमतौर पर निम्नलिखित खनिज होते हैं:

- **क्वार्ट्ज़:** ग्रेनाइट में सबसे प्रचुर मात्रा में पाया जाने वाला खनिज, क्वार्ट्ज़ पत्थर को उसकी कठोरता और ताकत देता है।
- **फेल्डस्पार:** यह खनिज समूह ग्रेनाइट में रंग भिन्नताओं के लिए जिम्मेदार है।

- मीका: मीका ग्रेनाइट को उसकी विशिष्ट चमक और डिलमिलाहट देता है।
- अन्य खनिज: एम्फीबोल, पाइरोक्सीन और गार्नेट जैसे ट्रेस खनिज भी कम मात्रा में मौजूद हो सकते हैं।

वही संगमरमर अपने सौंदर्य मूल्य के कारण अन्य आयाम पत्थरों के बीच एक अद्वितीय स्थान रखता है। भूवैज्ञानिक परिभाषा के संदर्भ में, यह तापीय और क्षेत्रीय कायापलट की स्थिति में पुनर्क्रिस्टलीकरण द्वारा निर्मित एक रूपांतरित चूना पत्थर है। व्यावसायिक भाषा में, पॉलिश करने में सक्षम सभी कैल्केरियस छट्टानों को संगमरमर के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। इसके अलावा, सर्पेन्टाइन छट्टानें, जिनमें थोड़ा कैल्शियम या मैग्नीशियम कार्बोनेट होता है, यदि आकर्षक और अच्छी पॉलिश लेने में सक्षम हैं, तो उन्हें भी संगमरमर के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। गोमेद, ट्रैवर्टीन और कुछ चूना पत्थर जैसे कैल्केरियस पत्थरों को भी संगमरमर के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

**इतिहास :** यहाँ पर मानपुरा, चन्देरिया, भेरडा मे प्राचीन समय से काले पत्थर की खदाने थी और अभी भी है। यह पत्थर ईमारती पत्थर एवं फर्शी के लिये विख्यात था जिस कारण गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान के सभी जिले, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा एवं पुरे उत्तरी भारत मे यहाँ से पत्थर जाता था। यहाँ के व्यापारी यहाँ पर पत्थर खरीदने आते थे जो चितौड़ एवं चन्देरिया रेल्वे स्टेशन से वेगन के वेगन भर कर पत्थर जाते थे।

मार्बल व्यवसाय सन् 1965 मे मकराना मे देशी मशीनो के द्वारा काटकर स्लेब बनाये जाते थे। वही व्यापारी मकराना से मार्बल खरीद कर चितौड़गढ़ मे काला पत्थर खरीदने आते थे। उन व्यापारीयो ने चितौड़ के व्यापारियो को मार्बल फेकट्री लगाने को प्रेरित किया और सन् 1975 मे सबसे पहले देशी गेगिसा मशीन जो कि रेती पानी एवं आयरन ब्लेड से मार्बल ब्लोक काटती थी एवं इसस उत्पादन 15 दिनो मे मात्र 1000 वर्गफिट होता है।

इसके बाद रिको ने 3 औद्यौगिक क्षेत्र बनाये 1 पुराना औद्यौगिक क्षेत्र , 2 चन्देरिया रिको औद्यौगिक क्षेत्र एवं 3. आजोलिया का खेडा औद्यौगिक क्षेत्र थे। कई देशी मशीने पॉलीशिंग मशीने, कटिंग मशीने उस समय लगी। उसके बाद सन 1987 मे पहली डायमण्ड सेगमेन्ट से मार्बल कटिंग की मशीन चितौड़गढ़ मे लगी। उसके बाद मार्बल उद्योग मे नई औद्यौगिक क्रांति आ गई। जो कि पहले 1 गेंगसा से महीने का 2 से 3 हजार वर्गफीट मार्बल कटता था वही अब 1 लाख वर्गफीट प्रतिमाह कटने लगा।



चितौड़गढ़ मार्बल उद्योग मे मकराना के बाद दुसरे नम्बर की मण्डी भारतवर्ष मे हो गई। तत्पश्चात् 2008–09 मे ग्रेनाईट उद्योग के कटर लगाने चालु हो गये। देखते देखते ही 2024 तक छोटी–बड़ी करीब 325 ईकाइयाँ ग्रेनाईट कटर की लग गई और इस प्रकार चितौड़गढ़ की मण्डी ने ग्रेनाईट एवं मार्बल के क्षेत्र मे भारतवर्ष मे पहचान बनाने लगी।

यह है कि आज इस मण्डी मे करीबन 60 ईकाईया मे आयातीत मार्बल भारत के बाहर से आयात कर तैयार करती है। यहाँ की मण्डी की विशेषता यह है कि यहाँ के व्यापारी उद्यमी ईमानदारी, क्वालिटी कन्ट्रोल और कस्टमर के साथ इस प्रकार का व्यवहार रखते है कि कस्टमर की पुर्णयता सन्तुष्टी मिलती है। चूंकि यहाँ पर रॉमटेरियल मार्बल हो या ग्रेनाईट सभी चितौड़गढ़ से 125–150 किमी दुर से ही लाया जाता है फिर भी यहाँ के उद्यमी की कार्यकुशलता की वजह से पुरे भारत वर्ष के व्यापारी पहली प्राथमिकता चितौड़गढ़ के व्यापारी को देते है उसके बाद ही अन्य जगह पर जाते है।

चितौड़गढ़ से करीब 10 किमी दुरी पर स्थित मांदलदा गाँव में भी चॉकलेटी कलर का मार्बल निकलता है जो अपनी चमक पॉलीश मे विश्व प्रसिद्ध है।

चितौड़गढ़ जिले मे वर्तमान लगभग 325 ईकाइयाँ इस क्षेत्र मे कार्यरत जिनमे लगभग 7850 करोड़ का निवेश है। इससे क्षेत्र मे रोजगार के पर्याप्त अवसर पेदा हूए तथा ये ईकाइयाँ स्थानीय स्तर के विकास मे अपनी भागीदारी निभा रही है। इन ईकाइयाँ मे प्रत्यक्ष एंव अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 18500 लोग कार्य कर रहे है। इससे रोजगार के साथ साथ निर्यात मे भी अपनी भागीदारी निभा रहा है। अप्रैल, 2022 से मार्च, 2023 तक 5476 लाख के उत्पाद के निर्यात हुए। चितौड़गढ़ क्षेत्र मे मुख्यतः ग्रेनाईट व मार्बल के प्रोसेसिंग व पॉलिशिंग का कार्य होता है। ग्रेनाईट यूनिट का हब क्षेत्र मुख्यतः चितौड़गढ़ एवं निम्बाहेड़ा

है। कच्चे माल के स्रोत के रूप में मार्बल राजसमंद, उदयपुर, बाबरमाल, पालोदा , केसरीयाजी, बांसवाडा, सलूम्बर, अम्बानी से आता है। ग्रेनाईट—पुर भीलवाडा जिला, राजसमंद, पाली, जालौर, सिरोही, जैसलमेर, बाडमेर से आता है।

इसके अलावा भीलवाडा, झांसी, ललितपुर प्रमुख कच्चे माल के क्षेत्र हैं।

मार्बल एवं ग्रेनाईट के अपशिष्ट उत्पाद भी आय का स्रोत होते हैं। इससे ईटे एवं सेरेमिक टाईल्स बनाने में उपयोग होता है। इसकी स्लेटी (अपशिष्ट उत्पाद) मोरवी (गुजरात) में सेरेमिक टाईल्स बनाने हेतु भेजी जाती है। मार्बल के टूकड़ों का भी फर्श बनाने में उपयोग होता है। इसके अलावा इसके अपशिष्ट पदार्थ से ईट बनाने का उद्योग मांदलदा में है। रोड के फिलिंग मेटेरियल में भी इसका उपयोग संभव है।

इस उद्योग के विकास के लिए जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र चितौड़गढ़ द्वारा पंच गौरव कार्यक्रम के तहत ODOP- उत्पाद ग्रेनाईट एवं मार्बल के उत्पाद के विकास हेतु एक कार्य योजना बनाई गई है। जिसमें कुल 1.5 करोड़ लागत से ODOP- गार्डन बनाने के साथ साथ डिस्प्ले वॉल, कॉफी टेबल बुक/ केटलॉग का निर्माण एवं जागरूकता कार्यक्रम के अन्तर्गत मार्केटिंग और स्टोरी टेलिंग एवं सोशल मीडिया द्वारा प्रचार प्रसार के लिए रणनीति तैयार की गई है। इसके अलावा उत्पाद के बेहतर मूल्य हेतु निर्यात प्रोत्साहन भी जरूरी है। अतः निर्यात प्रोत्साहन हेतु जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र चितौड़गढ़ में एक निर्यातक सुविधा केन्द्र (Export Facilitation Center) की कार्ययोजना भी तैयार की गई है।

रिप्स, प्रधानमंत्री रोजगार सर्जन कार्यक्रम, मुख्यमंत्री लघुउद्यम प्रोत्साहन कार्यक्रम एवं डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजस्थान दलित आदिवासी उद्यम प्रोत्साहन, 2024 के तहत सस्ती दरों पर ऋण एवं अन्य सरकारी सहयोग इन उद्योगों के विकास के लिए दिया जा रहा है।

RIPS- 2024 के तहत निवेश अनुदान, ब्याज अनुदान, स्टाम्प डयूटी छुट, भूमि रूपातंरण शुल्क में छुट सहित कई फायदे दिए जा रहे हैं। अहमदाबाद, दिल्ली, मुम्बई, के लिए सड़क व रेलवे के रूप में सुगम परिवहन व्यवस्था इस उद्योग के विकास के लिए निर्णायक भूमिका निभा रही है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में यहां के ग्रेनाईट व मार्बल का निर्यात किया जाता है। इसके साथ साथ देश के बाहर चीन, सउदी अरब, रूस आदि को निर्यात किया जाता है।

इसके साथ ही राज्य सरकार में उद्योगों सर्वांगीण विकास के लिए माननीय मुख्यमंत्री श्रीमान भजनलाल शर्मा ने 9 नई नीतियों का अनावरण 7 दिसम्बर, 2024 को किया। इनमें से ग्रेनाईट मार्बल उद्योग का बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित नितियाँ लॉन्च की गईं। इनका संक्षिप्त विवरण निम्नवत है:-

राजस्थान एमएसएमई नीति-2024

- उद्देश्य :** राज्य के एमएसएमई उद्यमों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के योग्य बनाना।
- प्रावधान:** इसमें ऋण पर अतिरिक्त 2 प्रतिशत ब्याज अनुदान, एमएसई एक्सचेंज से धन जुटाने पर रु. 15 लाख तक सहायता, एडवांस्ट टेक्नोलॉजी व सॉफ्टवेयर पर 50 प्रतिशत या 5 लाख तक अनुदान, क्वालिटी सर्टिफिकेशन व आईपीआर पर रु.3 लाख तक पुनर्भरण सहायता, विपणन हेतु आयोजनों में रु. 1.5 लाख तक अनुदान, डिजिटल उपकरणों रु. 50 हजार तक पुनर्भरण और ई—कॉमर्स प्लेटफार्म फीस पर 75 प्रतिशत या अधिकतम रु. 50 हजार तक पुनर्भरण का प्रावधान है।

#### राजस्थान निर्यात संवर्धन नीति—2024

- लक्ष्य :** आगामी 5 वर्षों में प्रदेश के निर्यात में रु. 1.50 लाख करोड़ तक वृद्धि लाना।
- प्रावधान:** इस नीति के तहत निर्यातकों को दस्तावेजीकरण पर 50 प्रतिशत या रु.5 लाख तक सहायता, अन्तर्राष्ट्रीय आयोजनों में भागीदारी पर 75 प्रतिशत या रु. 3 लाख तक अनुदान, सर्टिफिकेशन पर 75 प्रतिशत पुनर्भरण (रु. 20 हजार प्रति शिपमेंट व रु. 3 लाख तक प्रति वर्ष), तकनीकी अपग्रेडेशन पर 75 प्रतिशत या रु. 50 लाख तक सहायता, ई—कॉमर्स प्लेटफार्म फीस पर 75 प्रतिशत या रु. 2 लाख तक पुनर्भरण किया जाएगा।

#### एक जिला एक उत्पाद नीति (ओडीओपी)

- उद्देश्य:** विशिष्ट उत्पादों और शिल्पों को बढ़ावा देना।
- प्रावधान :** नवीन सूक्ष्य उद्यमों को 25 प्रतिशत या अधिकतम रु. 15 लाख एवं लघु उद्यमों को 15 प्रतिशत या अधिकतम रु. 20 लाख तक मार्जिन मनी अनुदान सहायता दी जाएगी।

नीति में सूक्ष्म व लघु उद्यमों को एडवांस्ट टेक्नोलॉजी व सॉफ्टवेयर पर 50 प्रतिशत या रु. 5 लाख तक अनुदान, क्वालिटी सर्टिफिकेशन व आईपीआर पर 75 प्रतिशत या रु. 3 लाख तक पुनर्भरण का प्रावधान किया गया है।

#### एकीकृत क्लस्टर विकास योजना

**उद्देश्य :** हस्तशिल्प, हथकरघा तथा एमएसएमई क्षेत्र में कार्यशील उद्यमों को वैश्विक बाजार के अनुरूप विकसित करना।

**प्रावधान:** योजना के अन्तर्गत राज्य के हस्तशिल्प, हथकरघा एवं सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों के मौजुदा क्लस्टर में कॉमन फेसिलिटी सेन्टर के माध्यम से प्रशिक्षण सुविधा का विकास किया जाएगा।

जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र चितौड़गढ़ विभिन्न योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन एवं उद्यमियों को इसमें आने वाले समस्याओं का तत्काल समाधान कर इसको बढ़ावा देने के लिए

कार्यरत है। इसके साथ ही मेलों, प्रदर्शनियों के द्वारा राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर इसके विकास के लिए प्रयासरत है। RISING RAJASTHAN 2024 समिट के दौरान जिला स्तरीय समिट में इसके विकास के लिए चर्चा की गई एवं राज्य की राजधानी जयपुर में हुए ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट में भी इस उद्योग को बढ़ावा हेतु सकारात्मक पहल हुई।

## एक जिला—एक पर्यटन

### विश्व विख्यात दुर्ग चित्तौड़गढ़

चित्तौड़गढ़ नगर राजपूताना के शौर्य, साहस, त्याग तथा गौरव की कहानियों से ओतप्रोत है। राजस्थान के चारण यहाँ के साहस, शौर्य और बलिदान की कहानियाँ गाते और सुनाते हैं, जो शहर के हर बालक और वृद्ध सभी की जिह्वा पर चढ़ी हुई हैं। चित्तौड़गढ़ का नाम इसके भव्य दुर्ग के नाम पर रखा गया है, जो 180 मीटर ऊँची पहाड़ी के ऊपर खड़ा है और 700 एकड़ के विशाल पठारी भूभाग में फैला हुआ है।

चित्तौड़गढ़ दुर्ग का इतिहास समय के कई उतार—चढ़ाव और उत्थान—पतन के झंझावातों से भरा हुआ है। राजपूती शासन के इस गढ़ की प्राचीर को अपने अनुपम इतिहास में तीन बार आक्रान्ताओं के भयावह आक्रमणों का सामना करना पड़ा है। पहला आक्रमण सन् 1303 ई. में, जब दिल्ली का सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी था, तब हुआ। दूसरा 1533 ई. में गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने किया, जिसमें जन—धन का भारी विनाश किया गया। इसके चार दशक बाद, 1568 ई. में साम्राज्य विस्तार की महत्वाकांक्षा से प्रेरित होकर मुगल सम्राट अकबर ने इस दुर्ग पर आक्रमण किया और इस पर अधिकार कर लिया। इसके पश्चात् 1616 ई. में, मुगल सम्राट जहाँगीर के शासनकाल में यह दुर्ग पुनः राजपूतों के अधिकार में आ गया।



चित्तौड़गढ़ दुर्ग

## राजपूती शौर्य का प्रतीक

चित्तौड़गढ़ दुर्ग राजपूती पौरुष और पराक्रम का एक अद्वितीय प्रतीक है। यह दुर्ग 180 मीटर ऊँची पहाड़ी पर स्थित है जो 700 एकड़ के भूभाग में फैला है। राजसी शान से खड़े इस दुर्ग के कण—कण में व्याप्त त्याग, प्रेम, सौन्दर्य, शौर्य, साहस एवं गौरव की कहानियों की अनुगृज इसके इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में अंकित हैं, जिन्हें राजस्थान की विरुदावलियों के गायक सदियों से गाते आ रहे हैं।

यहाँ एक किंवदंती प्रचलित है कि चित्तौड़गढ़ किले के परकोटे का निर्माण भारत के प्रसिद्ध पौराणिक महाकाव्य 'महाभारत' के वीर पांडव भाइयों में से एक भीम ने एक रात में बनाने का वचन दिया था, किन्तु वह प्रातःकाल में मुर्ग की बांग देने से पहले पूरा नहीं कर सका। अतः वह प्राचीर अधूरी रह गई।

किले में कई भव्य भवन, महल और स्मारक हैं, जिनमें से कुछ काल के क्रूर प्रवाह में दुर्भाग्य से नष्ट हो गए। इन भव्य भवनों का निर्माण एक ओर यहाँ के शासकों की विजय श्री को ज्ञापित करता है तो दूसरी ओर उन भवनों के खण्डहर आक्रांताओं के क्रूर हथौड़ों के निर्मम प्रहारों की याद दिलाते हैं। यहाँ का कण—कण यहाँ के अद्वितीय वीरों और वीरांगनाओं की आश्चर्यचकित कर देने वाली कहानियों से गूंजता रहता है।

चित्तौड़गढ़ नगर से इस दुर्ग के सात प्रवेश द्वारों को क्रमशः पाडनपोल, भेरवपोल, हनुमानपोल, गणेशपोल, जोड़लापोल, लक्ष्मणपोल तथा रामपोल को जोड़ती लगभग डेढ़ किलोमीटर लम्बी सड़क आगंतुकों को सातवें प्रवेशद्वार रामपोल तक पहुंचाती है।

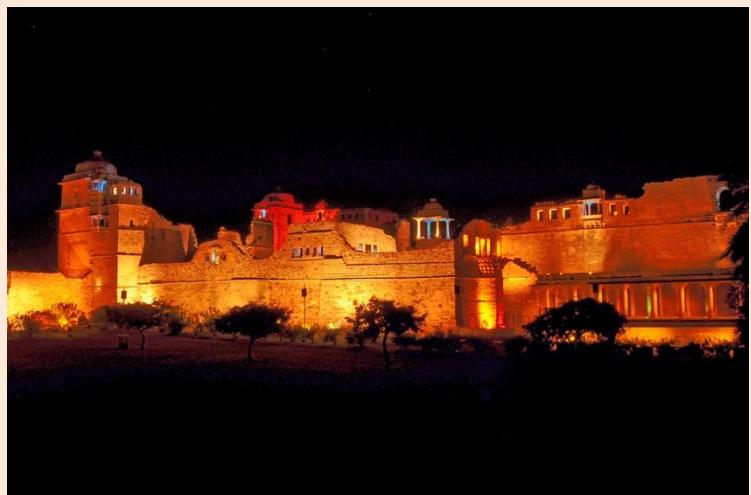
**चित्तौड़गढ़ किले के प्रमुख स्मारकों का विवरण निम्नानुसार है:—**

**राणा कुम्भा महल:**

महान ऐतिहासिक और स्थापत्यकला का सर्वाधिक प्राचीन एवं जीर्ण—शीर्ण महल, यह चित्तौड़ दुर्ग के सबसे विशाल भवनों में से एक है। इस प्राचीन महल का जीर्णोद्धार महाराणा कुम्भा द्वारा कराये जाने के कारण इसे कुम्भा महल के नाम से जाना जाता है। इसका मूल महल महाराणा कुम्भा के युग से भी पहले का है। महल का मुख्य प्रवेश द्वार त्रिपोलिया

दरवाजा है, जो फिलहाल बंद है। त्रिपोलिया दरवाजे के सामने का खुला क्षेत्र दरीखाना कहलाता है। दरीखाना के दाईं ओर सूरज—गोखड़ा और मुख्य महल स्थित है। इसके बाईं ओर रनिवास (जनाना महल) और कंवरपदा (राजकुमारों) के महल हैं। महलों के नीचे कई छोटे-छोटे तहखाने (कोठरियाँ) बने हुए हैं।

जो संभवतः मूल महल, रनिवास तथा कंवरपदा महलों के निर्माण से पहले कारीगरों और मजदूरों के ठहरने की सुविधा के लिये बने होंगे। कई इतिहासकारों ने इन तहखानों में जौहर होने का अनुमान व्यक्त किया है।



### फतेह प्रकाश पैलेस (राजकीय संग्रहालय):

उदयपुर के महाराणा फतेहसिंह द्वारा निर्मित, यह महल उनके निवास के लिये राजपूत

शैली में बनवाया गया था। इससे उनकी वास्तुकला और संस्कृति के प्रति रुचि प्रकट होती है। इसे अब एक संग्रहालय में बदल दिया गया है। इस महल में समीपरथ बस्सी गांव की प्रसिद्ध काष्ठकला के रूप में उत्कीर्ण कलाकृतियाँ, राशमी गांव से प्राप्त अंबिका और इंद्र की मध्यकालीन मूर्तियाँ, कुल्हाड़ी, चाकू और प्राचीन ढाल जैसे हथियार, पारंपरिक वेशभूषा, पेटिंग और बिल्लौरी बर्तन, आदिवासी लोगों की



मिट्टी की प्रतिकृतियाँ बड़ी मात्रा में संग्रहित हैं।

## **कुम्भश्याम मंदिरः**

इस मंदिर के विशाल परिसर में दो मंदिर स्थित हैं। कुम्भश्याम मंदिर और मीराबाई मंदिर!

प्रवेशद्वार के सामने ही कुम्भश्याम मंदिर है। इसका निर्माण 8वीं शताब्दी में हुआ था। मूल रूप से यह मंदिर भगवान वराह (वराह अवतार) को समर्पित था। पंद्रहवीं शताब्दी में महाराणा कुंभा ने इस मंदिर का जीर्णद्वार कराया और इस मंदिर में कुम्भश्याम की मूर्ति स्थापित की गई। इंडो-आर्यन शैली में निर्मित यह स्थापत्य शिल्प का अद्भुत उदाहरण है। प्रवेशद्वार तथा कुम्भश्याम मंदिर के बीच ऊँचे चबूतरे पर एक छोटा सा सुंदर मंदिर है जो एक खुले प्रांगण से घिरा हुआ है जिसके चारों कोनों में चार छोटे मंडप हैं। इसी परिसर में दक्षिणी पश्चिमी कोने की ओर मीरा-मंदिर है।

## **मीराबाई मंदिरः**

भगवान श्रीकृष्ण की अनन्य उपासक भक्तिमती मीराबाई इस मंदिर में उनकी पूजा करती थी। इस मंदिर की संरचना का प्रारूप उत्कृष्ट उत्तर भारतीय शैली के मंदिरों के शिल्पसौश्ठव को ध्यान में रखकर किया गया है। यह मंदिर एक ऊँचे चबूतरे पर निर्मित है और इसका शंक्वाकार शीर्ष दूर से देखा जा सकता है।

## **विजय स्तम्भः**

विजय स्तंभ का निर्माण 1440 ईस्वी और 1448 ईस्वी के बीच महाराणा कुंभा ने उनकी मालवा और गुजरात के मुस्लिम शासकों को पराजित करने की अपनी विजय को अमर बनाने और युद्ध के बाद जनमानस को राहत पहुंचाने के उद्देश्य से इसे स्तम्भ के रूप में निर्मित करवाया था। आंशिक रूप से लाल बलुआ पत्थर और आंशिक रूप से सफेद संगमरमर से निर्मित, यह वास्तुशिल्प का आश्चर्यजनक 122 फीट ऊँचा नौ मंजिला स्तम्भ है, जिसे हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियों से सजाया गया है। इसके भीतरी भाग में 157 संकरी सीढ़ियाँ हैं, जो इसकी छत पर बनी नौवीं मंजिल तक ले जाती हैं। इसकी बालकनियों से पूरे शहर का

शानदार विहंगम दृश्य देखा जा सकता है। यह स्तम्भ भगवान् विष्णु को समर्पित है तथा इसके मुख्य प्रवेश द्वार पर विष्णु की मूर्ति अंकित है। अतः इसे विष्णु स्तम्भ भी कहा जाता है।

### गौमुख जलाशयः

गौमुख जलाशय एक गहरा कुण्ड है जो इस दुर्ग की अंतर्वाहिनी जलधाराओं से भरता है, जो गौमुख या 'गाय के मुख' जैसी दिखाई देने वाली आकृतिनुमा चट्टान से निकलती है। स्थानीय लोग इस तालाब को पवित्र मानते हैं। इसमें एकत्र होने वाला अतिरिक्त जल दुर्ग के प्रथम प्रवेशद्वार पाडनपोल के समीप पूर्व की ओर एक झरने के रूप में गिरता है। अतः यह स्थान स्थानीय लोगों के लिये एक अच्छा 'पिकनिक स्पॉट' है।

### समिधेश्वर मंदिरः

मध्यकालीन भारत की मंदिर की वास्तुकला का अद्भुत उदाहरण समिधेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण 11वीं शताब्दी में मालवा के परमार राजा भोज ने कराया था। गुजरात का सोलंकी राजा कुमारपाल 1150 ई. में अजमेर के अर्णराज (अनोजी) चौहान को पराजित करने के बाद चित्तौड़ देखने आया था। उन्होंने इस मंदिर में पूजा—अर्चना की और इस मंदिर को एक गांव भी भेंट किया और वहां अपना शिलालेख भी लगवाया। 1428 ई. में महाराणा मोकल ने इसका जीर्णोद्धार करवाया, जिसके कारण इसे मोकल जी का मंदिर भी कहा जाता है। समिधेश्वर मंदिर में रखी भगवान् शिव की तीन मुख वाली मूर्ति मुंबई की एलिफेंटा गुफा की भगवान् शिव की मुख्य मूर्ति से काफी मिलती जुलती है।

### कालिका माता मंदिरः

8वीं शताब्दी ईस्वी में निर्मित, इस प्राचीन संरचना का निर्माण प्रारम्भ में सूर्य देवता की पूजा के लिए किया गया था। 14वीं शताब्दी में राणा हमीर ने इसका पुनर्निर्माण कराया और फिर यह मंदिर शक्ति और वीरता की प्रतीक देवी 'कालिका माता' को समर्पित कर दिया गया। इस मंदिर अम्बामाता की मूर्ति भी स्थापित की गई है।

## दुर्ग के पूर्वी सात द्वारः

चित्तौड़गढ़ दुर्ग के मुख्य प्रवेश द्वार प्रारम्भिक काल में पूर्व की ओर थे। इनका विवरण कीर्ति-स्तम्भ में अकित प्रशस्ति में बहुत सुन्दर वर्णन किया गया है। दुर्ग के पूर्व में स्थित सूरजपोल गाँव की ओर से दुर्ग पर चढ़ते समय इन द्वारों के नाम क्रमशः रामपोल, भैरवपोल, हनुमानपोल, चामुण्डापोल, तारापोल, लक्ष्मीपोल तथा सूरजपोल हैं। ये द्वार वर्तमान में खण्डित अवस्था में हैं। पूर्व में बसे गाँवों के निवासी इन द्वारों का आज भी उपयोग करते हैं।

## कीर्ति स्तम्भः

यह 'टॉवर ऑफ फेम' प्रथम जैन तीर्थकर आदिनाथजी (ऋषभदेव जी) को समर्पित है। इसे दिगंबर (जैन भिक्षुओं) की आकृतियों से सुसज्जित किया गया है। यह सात मंजिली मीनार 12वीं शताब्दी में एक धनी जैन व्यापारी द्वारा बनाई गई थी। इसके समीप ही नेमीनाथ जी, आदिनाथ जी और पार्वनाथ जी का जैन मंदिर भी स्थित है।

## रतन सिंह पैलेसः

यह राजसी परिवार का दो मंजिला महल है। इसमें एक शिव मंदिर बना हुआ है। इसके सामने पूर्व की ओर एक छोटी झील दिखाई देती है, जिसे रतनेश्वर तालाब कहा जाता है। यद्यपि महल जर्जर अवस्था में है, फिर भी यह पर्यटकों के लिये ऐतिहासिक घटनाओं के साथ आकर्षण का केन्द्र है।



## **पद्मिनी महल:**

यह महल पद्मिनी तालाब के उत्तरी तट पर स्थित है। ऐसा कहा जाता है कि राणा रतन सिंह की रानी पद्मिनी अत्यंत सुन्दर, चतुर एवं पराक्रमी थीं। महल में रानी के अलावा उनकी दासियों के भी छोटे-छोटे कमरे हैं तथा महल के प्रांगण में सुन्दर उद्यान है। पद्मिनी जलाशय के मध्य में मेहराब युक्त प्रवेश द्वारों के साथ तीन मंजिला भवन है, जिसे जल महल के नाम से जाना जाता है।

## **भामाशाह की हवेली:**

भामाशाह की हवेली मातृभूमि और शासक वर्ग के प्रति निष्ठावान एवं समर्पित इतिहास प्रसिद्ध पुरुषों की उदात्त भावना को प्रकट करती है जो उस व्यक्ति के लिए उपयुक्त है, जिसके लिए इसे बनाया गया था। भामाशाह का राजपूत इतिहास में काफी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वह महाराणा प्रताप के सबसे प्रसिद्ध मंत्रियों में से एक थे। वह और उनके भाई ताराचंद महान कुशाग्र योद्धाओं के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने महाराणा प्रताप के अधीन कई लड़ाइयाँ लड़ीं, जिनमें हल्दीघाटी की लड़ाई भी शामिल है। वस्तुतः मुगलों के विरुद्ध लड़ाई के लिए महाराणा प्रताप के पास धन समाप्त हो गया था, भामाशाह और ताराचंद ने प्रताप को अपनी संपत्ति भेंट कर दी थी। यह हवेली खण्डहरों में बदल गई है। इस हवेली के पश्चिम की ओर ठीक पीछे मोती बाजार और नगीना बाजार के अवशेष भी हैं।

भामाशाह की हवेली के स्थान के समीप ही आल्हा काबरा की हवेली है, जिसका प्रवेश द्वार एक स्तंभयुक्त बरामदे की ओर बढ़ने के लिये आपका स्वागत करता है। अंदर जाने पर आप कई कमरों की झलक देख सकते हैं, जो कहीं-कहीं तीन मंजिल तक ऊंचे हैं। इसमें कहीं-कहीं मुगलकालीन शिल्प का प्रभाव भी दिखाई देता है।

सीताफल के पेड़ों से आच्छादित इस हवेली के परिसर के समीप ही पूर्व की ओर एक महादेव मंदिर है। जिसके समीप ही दक्षिण की ओर पुरातत्व विभाग का कार्यालय और तोपखाना है। इसके सामने उत्तर की ओर प्राचीन मंदिरों एवं महलों के खण्डित प्रस्तर-खण्ड रखे हुए हैं, जो अपनी मूक चीत्कार में चित्तौड़गढ़ के गौरवाशाली इतिहास को प्रकट करते हैं।

इन सभी का रखरखाव भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा किया जाता है।

## जैन मंदिर (सात-बीस देवरी):

चित्तौड़ के किले की दीवारों के भीतर छह जैन मंदिर हैं। उनमें से सबसे बड़ा भगवान आदिनाथ का मंदिर है जिसमें 52 'देवकुलिकाएँ' हैं। सातबीस देवरी जैन मंदिर चित्तौड़गढ़ किले में कुम्भा महल से आगे बड़ी पोल के सामने दाहिनी ओर पश्चिमाभिमुख मंदिर है। इस मंदिर में बने कुल 27 छोटे-छोटे मंदिरों में जैनियों के प्रसिद्ध तीर्थकरों की मूर्तियाँ हैं। अतः इसे सातबीस देवरी मंदिर कहा जाता है। इन मंदिरों के अंदर और बाहर की ओर उत्कीर्ण शिल्पकला अद्भुत है। इस मुख्य मंदिर के पीछे की ओर दो और मंदिर हैं। इस मंदिर का निर्माण भूपालसागर के एक श्रेष्ठि सीमन्तशाह ने करवाया था।

## जयमल और पत्ता के स्मारक:

चित्तौड़गढ़ किले के अंदर स्थित, जयमल और पत्ता का महल राजपूतों की बहादुरी और वीरता का प्रतीक है। इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद ओझा के अनुसार 1567 ई. में जब अकबर की विशाल सेना ने मेवाड़ राज्य पर अधिकार करने के विचार से चित्तौड़गढ़ के किले को घेर लिया तो महाराणा उदयसिंह के सरदारों ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि इस संकटकालीन समय में महाराणा के परिवार को सुदूर पहाड़ियों में सुरक्षित स्थान पर भिजवाना बुद्धिमानी होगी।

इसके बाद किले की सुरक्षा की जिम्मेदारी राठौड़ जयमल और सिसौदिया पत्ता के नेतृत्व में कुछ सरदारों की समिति को सौंप दी गई। अकबर की सेना से हुए युद्ध में जयमल और पत्ता ने असाधारण वीरता का प्रदर्शन करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी। उनकी वीरता और साहस से प्रभावित होकर अकबर ने स्वयं आगरा किले के बाहर हाथी पर बैठे दोनों वीरों की आकृतियाँ लगवाई। बाद में औरंगजेब ने उन वीरों की मूर्तियों को हटवा दिया। चित्तौड़गढ़ के किले में जयमल और पत्ता ने मातृभूमि की रक्षा में जहाँ अपने प्राण न्योछावर किये थे, उन स्थानों पर उनके सम्मान में बने स्मारक देखे जा सकते हैं।

## **कल्लाजी एवं जयमल जी की छतरियाँ:**

दुर्ग के दूसरे द्वार भैरवपोल और तीसरे द्वार हनुमानपोल के बीच सड़क के दाईं ओर आगंतुकों को कल्ला राठौड़ और जयमल के स्मृति और सम्मान में बनाई गई दो छतरियाँ देखने को मिलती हैं। इन दोनों वीरों ने 1568 ई. में सम्राट् अकबर की सेना से लोहा लेते हुए अपने प्राणों की आहुतियाँ दी थी। इनमें से चार खम्भों वाली छतरी कल्लाजी की और छः खम्भों वाली छतरी जयमल जी की है।

पत्ताजी का स्मारक दुर्ग के सातवें द्वार 'राम पोल' के ठीक सामने पूर्व की ओर बना है।

## **तुलजा भवानी मंदिरः**

राम पोल से आगे दक्षिण की ओर देवी दुर्गा को समर्पित इस मंदिर का निर्माण 16वीं शताब्दी में बनवीर ने करवाया था। किंवदंती है कि इसका नाम बनवीर के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने राहत कोष के लिए अपने वजन के बराबर विभिन्न आभूषण (तुला दान) दान किए थे। कालांतर में चित्तौड़गढ़ दुर्ग पर मराठों का आधिपत्य होने के कारण सम्भवतया मराठों ने इस मंदिर में अपनी आराध्य देवी मां तुलजा भवानी की मूर्ति स्थापित की होगी। अतः बाद में इस मंदिर को तुलजा भवानी के मंदिर के नाम से जाना जाने लगा।

## **चित्तौड़गढ़ दुर्ग पर 'प्रकाश एवं ध्वनि'(Light and Sound) कार्यक्रमः**

चित्तौड़गढ़ दुर्ग पर स्थित कुम्भा महल के विशाल प्रांगण में 'लाइट एंड साउंड शो' प्रतिदिन सायंकाल दर्शाया जाता है, जिसमें डीएमएक्स नियंत्रित एलईडी ल्यूमिनरीज़, गोबो लाइट्स, 5.1 ऑडियो सराउंड सिस्टम के मंत्रमुग्ध कर देने वाले ध्वनि एवं प्रकाश प्रभाव के साथ ऐतिहासिक घटनाएं शामिल हैं। इस शो में चित्तौड़गढ़ दुर्ग का इतिहास, इसकी स्थापना, इसके शासकों के समय का वैभव, किले पर लड़े गए युद्धों और मध्यकालीन आक्रांता अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण को दर्शाया गया है।

## **पर्यटक एवं कार्ययोजना**

चित्तौड़गढ़ दुर्ग भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का संरक्षित स्मारक है। यहां वर्ष पर्यन्त पर्यटकों का आवागमन रहता है। गत तीन वर्षों की पर्यटक आगमन सांख्यकी निम्नानुसार है:-

2021–22 : देशी 476064 एवं विदेशी 186

2022–23 : देशी 790826 एवं विदेशी 6885

2023–24 : देशी 865401 एवं विदेशी 12487

चित्तौड़गढ़ दुर्ग देश का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, यहां आने वाले पर्यटकों के लिये आधारभूत सुविधाओं की कमी महसूस की जाती है। अतः पंच गौरव कार्यक्रम के तहत प्रथम चरण में पर्यटकों के लिये आधारभूत सुविधाओं का विकास किया जा कर पर्यटकों का भ्रमण सुलभ बनाया जाना है।

- कार्ययोजना के प्रथम चरण में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियाँ—
  - चित्तौड़गढ़ दुर्ग पर पर्यटकों के सुलभ भ्रमण हेतु दुर्ग को अतिक्रमण मुक्त करवाना।
  - पर्यटकों की सुविधार्थ समुचित संख्या में जनसुविधा उपलब्ध करवाना।
  - पर्यटकों को वास्तविक एवं तथ्यात्मक ऐतिहासिक जानकारी उपलब्ध करवाने हेतु साइनेज एवं सुलभ भ्रमण हेतु डायरेक्शनल साइनेज लगावाना।
- कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय तथा पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रूपये में)—  
जन सुविधाओं का निर्माण – 50 लाख

डायरेक्शनल साइनेज एवं ऐतिहासिक विवरण साइनेज –20 लाख

फुटकर व्यापारियों हेतु कियोस्क निर्माण – 30 लाख

कुल – 100 लाख

कार्ययोजना के क्रियान्वयन के लिये भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण से विस्तृत लागत विवरण एवं प्रस्ताव मांगे गये हैं।

## एक जिला—एक खेल

### कबड्डी



\* प्रस्तावना :-

- कबड्डी प्राचीन भारतीय खेल है। महाभारत जैसे ग्रथों में इसका उल्लेख पाया जाता है जो लगभग 4000 वर्ष पुराना है।

\* कबड्डी की अवधारणा :-

- यह मुख्यतः जीवित रहने और आत्मरक्षा का खेल था। इसका उल्लेख महाभारत जैसे शुरुआती ग्रंथों में किया गया है, जहाँ कहा जाता है कि अभिमन्यु ने युद्ध के दौरान कबड्डी जैसी रणनीति का इस्तेमाल किया था। माना जाता है कि यह खेल शारीरिक शक्ति, रणनीति और टीम वर्क बनाने के तरीके के रूप में विकसित हुआ था।
- कबड्डी प्राचीन तमिलनाडु के अयार आदिवासी लोगों के बीच लोकप्रिय थी।
- यह खेल गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से सिखाया जाता था।
- यह खेल ग्रामीण क्षेत्रों में एक मनोरंजक गतिविधि के रूप में खेला जाता था।

### ➤ विकास :-

- इसे 1938 में भारतीय ओलंपिक खेलों में शामिल किया गया था।
- अखिल भारतीय कबड्डी महासंघ का गठन 1950 में हुआ था।
- भारतीय एमेच्योर कबड्डी महासंघ (एकेएफआई) की स्थापना 1973 में हुई थी।
- कबड्डी को सर्वप्रथम 1982 के एशियन खेलों में प्रदर्शन के रूप में शामिल किया गया जो 1990 एशियन खेलों में अधिकारिक रूप से शुरू हुआ। अब तक कबड्डी के चार वर्ल्ड कप खेले जा चुके हैं एवं प्रो कबड्डी नाम से व्यवसायिक कबड्डी लीग के 11 संस्करण सफलतापूर्वक पूर्ण हो चुके हैं।

### ➤ मार्शल मूल :-

- कबड्डी को शारीरिक शक्ति, चपलता और युद्ध रणनीति विकसित करने के लिए डिजाइन किया गया था।
- प्रशिक्षण कठोर था, जिसमें सहनशक्ति, फेफड़ों की क्षमता और टीम समन्वय विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

### ➤ सांस्कृतिक महत्व :-

- कबड्डी भारत भर के गांवों और समुदायों में एक पसंदीदा खेल है।
- इसे एशियाई खेलों, एशियाई इनडोर खेलों में शामिल किया गया है।

### ➤ कबड्डी खेल के उद्देश्य :-

- कबड्डी एक टीम खेल है जो साहसिक मानसिकता के साथ चपलता, गति, ताकत और सहनशक्ति का विकास करता है।
- सीनियर नेशनल महिला पुरुष में राष्ट्रीय स्तर पर पदक विजेता खिलाड़ियों को राज्य सरकार आउट ऑफ टर्म पॉलिसी के अंतर्गत सरकारी सेवाओं में रोजगार के अवसर प्रदान करती है। लगभग सभी विभागों में कबड्डी खिलाड़ी भर्ती किए जाते हैं।  
(राजस्थान रोडवेज, राजस्थान पुलिस, BSNL भारतीय सेना, अर्द्ध सैनिक बल, बैंक एवं लिमिटेड कंपनी, इत्यादि।)

### \* आधुनिक मानकीकरण :-

- कबड्डी को 1900 के दशक की शुरुआत में औपचारिक रूप दिया जाने लगा। 1923 में, इस खेल के लिए नियमों का पहला सेट भारत के महाराष्ट्र में विकसित किया गया था। पहला मान्यता प्राप्त कबड्डी टूर्नामेंट 1923 में बड़ौदा (अब वडोदरा), गुजरात में आयोजित किया गया था।

### \* स्वतंत्रता के बाद (1947) :-

- भारत की स्वतंत्रता के बाद, कबड्डी को राष्ट्रीय खेल के रूप में बढ़ावा देने के लिए इसके नियमों को मानकीकृत करने के प्रयास किए गए। 1950 में, खेल के विकास

की देखरेख और राष्ट्रीय टूर्नामेंट आयोजित करने के लिए अखिल भारतीय कबड्डी महासंघ का गठन किया गया।

\* **राष्ट्रीय खेलों में शामिल करना :-**

- कबड्डी को 1951 में भारतीय राष्ट्रीय खेलों में शामिल किया गया, जिससे इसकी लोकप्रियता और बढ़ गई।

\* **अंतर्राष्ट्रीय एशियाई खेल :-**

- जब 1990 में बीजिंग, चीन में एशियाई खेलों में कबड्डी को शामिल किया गया, तो इसने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ध्यान आकर्षित किया।
- भारत ने इस खेल में अपनी शुरुआत से ही अपना दबदबा बनाए रखा है और कई स्वर्ण पदक जीते हैं 2004 से कबड्डी विश्व कप आयोजित किए जाने लगे, जिसमें भारत अक्सर चौंपियन बनकर उभरता रहा।

\* **एमेच्योर कबड्डी फेडरेशन ऑफ इण्डिया (AKFI) :-**

- भारत में अधिकारिक रूप से कबड्डी खेल का संचालन (AKFI) द्वारा किया जाता है। इसके अधीन राज्य स्टेट कबड्डी एसोसिएशन राजस्थान में अधिकारिक रूप से कबड्डी का संचालन करती है जिसकी समस्त जिलों में जिला कबड्डी संघ की ईकाइयों का गठन होता है।
- समस्त जिला इकाई व राजस्थान स्टेट कबड्डी संघ राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद जयपुर से संबद्धता रखता है एवं इनके द्वारा अधिकारिक प्रतियोगिताओं एवं राष्ट्रीय स्तर पर जाने वाले खिलाड़ियों का समस्त व्यय राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद द्वारा वहन किया जाता है एवं प्रतियोगीता के पर्यवेक्षक की मौजूदगी में संपन्न होती है।

\* **चित्तौड़गढ़ में कबड्डी के प्रचलित क्षेत्र :-**

कबड्डी खेल को जिले में प्रत्येक स्थान पर खेले जाने वाला खेल है। परन्तु विद्यालय व फेडरेशन व ऑपन प्रतियोगिता में चित्तौड़गढ़ जिले में भदेसर ब्लॉक में भालूण्डी, नपावली, लेसवा, भदेसर व चित्तौड़गढ़ ब्लॉक में पायरी, सामरी, चन्द्रेरिया, सादी, बस्सी व निम्बाहैड़ा ब्लॉक में सतखण्डा, मरजीवी, फाचर, व राशमी ब्लॉक में सिहाना, उपरेला, भालोटा कि खेड़ी, राशमी व गंगरार ब्लॉक में डेट, गंगरार कि सादी, गंगरार व बड़ीसादडी ब्लॉक में भाणुजा, कचुमरा, पीण्ड व कपासन ब्लॉक के उचनार खूर्द, रोलिया व दोवनी ग्राम पंचायतों में अत्यधिक खेले जाना वाला खेल है। यहां से प्रतिवर्ष कई खिलाड़ी राज्य स्तर पर भाग लेते हैं।

\* **चित्तौड़गढ़ में कबड्डी खेल कि वर्तमान स्थिती :-**

- कबड्डी ग्रामीण अंचल से लेकर महानगरों में कबड्डी प्रिमियर लीग के माध्यम से आज भी अपनी लोकप्रियता कायम रखे हुए है और इस खेल में भारत कई बार विश्व

चैम्पियन बना है। एशियाई खेलों में कई स्वर्ण पदक जीते हैं। इसी क्रम में राजस्थान में भी यह खेल हर एक स्तर पर चाहे स्कूली खेल प्रतियोगिता हो या खेल संघों द्वारा आयोजित प्रतियोगिता हो सबसे ज्यादा खेले जाने वाला खेल है। इनके अलावा भी स्थानीय मेलों में या किसी अन्य महोत्सव में या जन प्रतिनिधियों द्वारा आयोजित आयोजनों में भी सबसे ज्यादा उत्साह से आयोजन किया जाने वाला एक मात्र खेल है। जो लोगों को मनोरजन के साथ एक स्वस्थ वातावरण से जोड़ता है। खेल कि लोकप्रियता के आधार पर चित्तौड़गढ़ में भी सबसे ज्यादा खेले जाना वाला व पसन्द किये जाने वाला खेल रहा है।

- कब्बड़ी खेल में जिला चित्तौड़गढ़ भी अपनी एक अलग पहचान लिए है। इसीलिए आज इस खेल को चित्तौड़गढ़ के पंच गौरव कार्यक्रम में व एक जिला एक खेल के रूप में स्थान मिला है। यह खेल किसी भी प्रतियोगिता में सबसे ज्यादा भाग लेने वाले खिलाड़ियों व सबसे अधिक पसन्द किया जाने वाला खेल रहा है। स्कूली प्रतियोगिता 14 वर्ष से लेकर 19 वर्ष तक या जिला खेल संघ द्वारा आयोजित सभ जूनियर, जूनियर, सीनियर व पिछले वर्षों में आयोजित ग्रामीण ओलम्पिक में भाग लेने वाले खिलाड़ियों की संख्या अन्य खेलों से कई गुणा अधिक रही है।
- चित्तौड़गढ़ में कब्बड़ी को प्रोत्साहित करने के लिए जनप्रतिनिधियों, सांसद, विधायकों व जिला प्रमुख द्वारा जिले में खेलों का भव्य आयोजन किया गया। जिनमें कब्बड़ी के हजारों खिलाड़ियों ने बढ़—चढ़ कर भाग लिया व सफल आयोजन बनाया इसी क्रम में जनप्रतिनिधियों द्वारा खिलाड़ियों को प्रोत्साहन के लिए लगभग हर एक ग्राम पंचायत स्तर पर कब्बड़ी मेट उपलब्ध करवायी गई। जिससे ग्राम स्तर पर कब्बड़ी खेल नियमित अभ्यास से निखरा है। इससे खेल प्रतियोगिता में खिलाड़ियों के प्रदर्शन में सुधार हुआ है।
- ब्लॉक स्तर मुख्यालय एवं ग्राम पंचायत स्तर पर भी डी.एम.एफ.टी बजट स्वीकृत कराकर जिला प्रशासन द्वारा 100 से अधिक खेल स्टेडियम व खेल मैदान का निर्माण कराया जा रहा है। जिससे ब्लॉक व ग्राम पंचायत स्तर पर कब्बड़ी का नियमित अभ्यास चालू होने से इस खेल का अच्छा वातावरण बना है।
- राष्ट्रीय दशहरा मेला निम्बाहेड़ा एवं दशहरा मेला मरमी, अनगढ़ बावजी भदेसर व बैंगू क्षेत्र में आयोजित खेल प्रतियोगिता में कब्बड़ी में जिले के साथ—साथ राज्य स्तर के खिलाड़ी भी भाग लेते हैं व स्थानीय लोग भी खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करते हैं।
- जिला मुख्यालय पर भी आउटडोर कब्बड़ी मैदान, जिम हॉल, ट्रैक 400 मी., एवं कब्बड़ी मैट्स की सुविधाएं उपलब्ध हैं।
- जिले में चित्तौड़गढ़, निम्बाहेड़ा, भदेसर, कपासन, बैंगू, राशमी, गंगरार ब्लॉक में कब्बड़ी के कई खिलाड़ी निकले हैं। जो विभिन्न क्षेत्रों में जेसे राजकीय सेवा शारीरिक शिक्षक, पुलिस सेवा एवं सीमा सुरक्षा बल व अन्य कई क्षेत्रों में राष्ट्रीय प्रगति में अपना योगदान दे रहे हैं। वर्तमान में स्कूली राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भी कई खिलाड़ी राजस्थान का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं व बहुत सारी नई प्रतिभाएं उभर कर जिले का नाम रोशन कर रही हैं।

### \* भविष्य की कार्य योजना :—

चित्तौड़गढ़ में खेल का अच्छा वातावरण है परन्तु खिलाड़ीयों को उचित सुविधाएं व प्रशिक्षण के अभाव में अपना प्रदर्शन राष्ट्रीय स्तर प्रतियोगिता में अपना योगदान नहीं दे पाते और उन्हें अवसर प्राप्त नहीं होता इसलिए बेहतर सुविधाएं व विकल्प के अवसर प्रदान कर खिलाड़ीयों को खेलों में अपना भविष्य संवार सके इसलिए जिला मुख्यालय पर निम्न सुविधाओं को विकसित करना होगा।

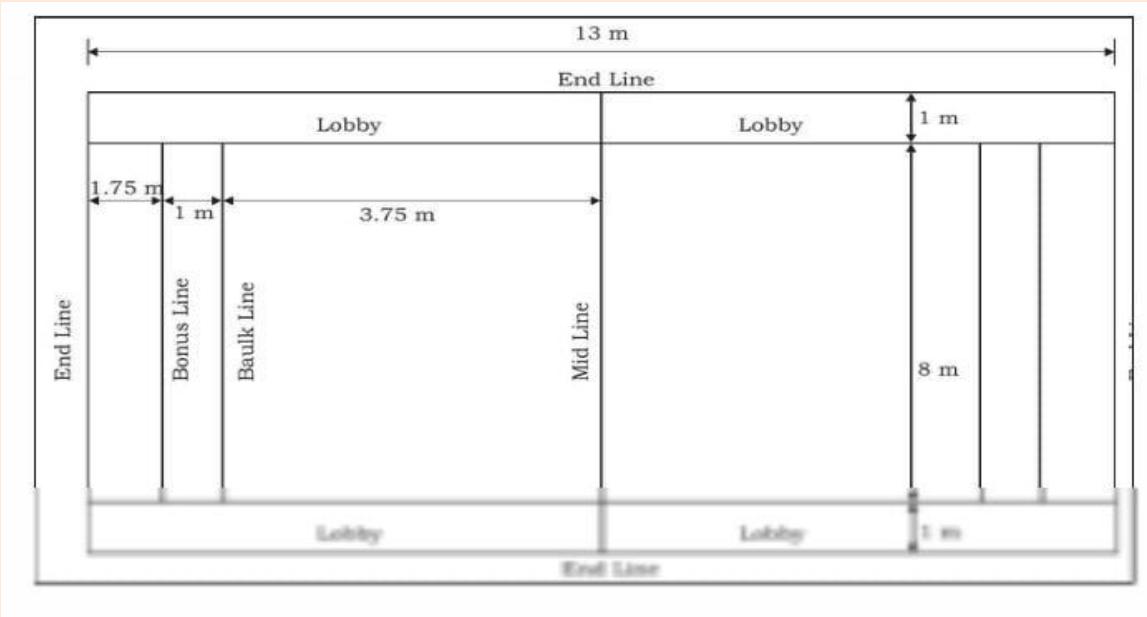
#### ● कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधिया :—

- खेल आवासीय अकादमी का निर्माण :— बजट घोषणा के तहत एक जिला एक खेल हेतु खिलाड़ीयों के लिए आवासीय अकादमी का निर्माण जिला मुख्यालय इन्दिरा गांधी स्टेडियम पर प्रस्तावित है। ताकि भविष्य में प्रतिभावान खिलाड़ीयों को आवास व भोजन की व्यवस्था एक जगह सुनिश्चित हो पायेगी।
- इस योजना के तहत प्रतिभावान खिलाड़ीयों का चयन किया जायेगा व उन्हें उच्च स्तरीय प्रशिक्षक से की प्रशिक्षण की आधुनिक सुविधाएँ प्रदान कि जायेगी, जिससे वो अपना प्रदर्शन में सुधार कर जिले का नाम रोशन कर सकेंगे।
- कब्बड़ी खेल के आधुनिकरण हेतु इण्डोर हॉल का निर्माण किया जाना आवश्यक है। ताकि खिलाड़ीयों का अभ्यास निरंतर हर एक वातावरण में बिना बाधित हुए किया जा सके।
- राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद द्वारा जिला मुख्यालय पर प्रशिक्षक कि नियुक्ति की जानी है। जो नियमित प्रातः व सांय काल प्रशिक्षण देगा।
- भविष्य में जिले में प्रत्येक ब्लॉक मुख्यालय पर कब्बड़ी मेट उपलब्ध करवाने कि महति आवश्यकता है, जिससे जिले के दुर दराज ग्रामीण परिवेश के खिलाड़ीयों को उचित अवसर प्रदान हो तथा ब्लॉक सेन्टरों पर भी प्रशिक्षक/शारीरिक शिक्षक की नियुक्ति किया जाना है।

कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित लागत :—कुल व्यय तथा पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रुपये में) —

- कब्बड़ी इण्डोर हॉल  $30 \times 15$  मीटर अनुमानित लागत 1,50,00,000 रुपये
- जिला मुख्यालय पर 2 सेट कब्बड़ी मेटस अनुमानित लागत 7,00,000 रुपये

- कबड्डी ऑउटडोर ग्राउंड में फेन्सिंग व लाईटिंग का कार्य अनुमानित लागत 2,50,000 रुपये
- खेल के मापदंड :-



\*\*\*\*\*